POLITICAL SCIENCE (Hons.)
B.A.- 2 (Sub.)

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur,
Samastipur

संविधानवाद की अवधारणाएं –

संविधानवाद राजनीतिक समाज के आदर्शों एवं मूल्यों से संबंधित होता है। विभिन्न राष्ट्रों के आदर्श एवं मूल्य अलग-अलग हो सकते हैं। अतः संविधानवाद की अवधारणा में भी भिन्नता हो सकती है। मोटे तौर पर संविधानवाद की तीन अवधारणाएं मानी जाती हैं –

1. संविधानवाद की पाश्चात्य अवधारणा।
2. संविधानवाद की साम्यवादी अवधारणा।
3. संविधानवाद की विकासशील लोकतंत्र की अवधारणा।

1. संविधानवाद की पाश्चात्य अवधारणा –

इस अवधारणा के तहत व्यक्ति की स्वतंत्रता को साध्य माना जाता है। यह प्रणाली उदार लोकतंत्र में पाई जाती है। इस अवधारणा के तहत राजनीतिक शक्ति पर सुनिश्चित नियंत्रण व्यवस्था पाई जाती है। यहां व्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ-साथ राजनीतिक समानता, सामाजिक-आर्थिक न्याय, लोककल्याण की साधना, विधि का शासन आदि पाए जाते हैं। यहां शक्ति पृथक्करण पर जोर दिया जाता है। उचित समयान्तराल पर नियमित चुनाव होते हैं।

Scanned with CamScanner